कृषक ज्योति

कृषक ज्योति
Krishak Jyoti

भाग -1, अंक 2 जनवरी-2026

त्रैमासिक पत्रिका

संपादक - मंडल

डॉ. राजेंद्र प्रसाद

मुख्य संपादक

ediotorinchief@krishakjyoti.in

प्रोफेसर, उद्यान विज्ञान विभाग,
कुलभास्कर आश्रम PG कॉलेज
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

सौम्या तिवारी

संपादक

editor@krishakjyoti.in

प्रबंधन अध्ययन विद्याशाखा उत्तर प्रदेश
राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज

डॉ अनुराग रजनीकांत तायडे

संपादक

editor@krishakjyoti.in

सहायक प्रोफेसर कीट विज्ञान विभाग,
शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. अमित कुमार

संपादक

editor@krishakjyoti.in

सहायक प्रोफेसर कृषि अर्थशास्त्र विभाग,
SHUATS, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

निखिल तिवारी श्रीदत्त

सह-संपादक

coeditor@krishakjyoti.in

टीचिंग एसोसिएट कृषि विस्तार एवं संचार
विभाग, शुआट्स,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

पत्रिका का प्रकार - हिंदी, त्रैमासिक पत्रिका, कृषि पत्रिका

पंजीकृत कार्यालय - 4/4सी, म्योर रोड, इलाहाबाद, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश -211002

Website - www.krishakjyoti.in

E-mail - editorinchief@krishakjyoti.in

Contact - 9450681433

e-ISSN No. 3108-1770

जलवायु परिवर्तन के दौर में सबसे सुरक्षित पशुधन विकल्प

बकरी पालन कम लागत में नियमित नकद आय देने वाला बरबरी बकरी पालन मॉडल

प्रखर राय[1] , रोहित कुमार[2] , हिमांशु प्रजापति[3]

कृषि परास्नातक छात्र - सस्य विज्ञान विभाग (कृषि संकाय)

(प्रो राजेंद्र सिंह "रज्जू भय्या" विश्वविद्यालय,प्रयागराज)

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन ने कृषि एवं पशुपालन की पारंपरिक व्यवस्था को गंभीर रूप से प्रभावित किया है।

अनियमित वर्षा, बढ़ता तापमान, सूखा, चारे की कमी और प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती घटनाओं के कारण छोटे एवं सीमांत किसानों की आय अस्थिर होती जा रही है। ऐसी परिस्थितियों में बरबरी नस्ल पर आधारित बकरी पालन एक ऐसा विकल्प बनकर उभरा है, जो कम संसाधनों में भी सफलतापूर्वक किया जा सकता है और पूरे वर्ष नियमित नकद आय प्रदान करता है। तेज प्रजनन क्षमता, कम स्थान में पालन, सीमित चारे में भी बेहतर उत्पादन तथा बाजार में इसकी निरंतर मांग इसे जलवायु अनुकूल पशुधन बनाती है। जलवायु परिवर्तन और पशुपालन जलवायु परिवर्तन का सबसे अधिक प्रभाव चारा उत्पादन, जल उपलब्धता और पशुओं के स्वास्थ्य पर पड़ता है। बड़े पशुओं की तुलना में बकरियाँ उच्च तापमान, सूखा तथा ऊसर परिस्थितियों को अधिक सहन कर लेती हैं। झाड़ियों, पेड़ों की पत्तियों और फसल अवशेषों पर जीवित रहने की उनकी क्षमता उन्हें बदलते मौसम में भी उत्पादक बनाए रखती है। यही कारण है कि सूखा एवं अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में बकरी पालन तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

बरबरी बकरी पालन का महत्व बरबरी नस्ल भारत की प्रमुख मांस उत्पादन वाली बकरियों में से एक है, जो कम स्थान में पालन के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है। इसका शरीर छोटा होने के कारण इसे स्टाल फीडिंग प्रणाली में आसानी से पाला जा सकता है। यह नस्ल जल्दी परिपक्व होती है तथा जुड़वा और

तिड़वा बच्चों के लिए प्रसिद्ध है, जिससे कम समय में पशुओं की संख्या और आय दोनों बढ़ती हैं। शहरी एवं ग्रामीण बाजारों में बरबरी के बच्चों की अच्छी कीमत मिलती है, जिससे किसान को नियमित नकद आय प्राप्त होती है। कम लागत बरबरी बकरी पालन की सबसे बड़ी विशेषता इसका कम लागत वाला प्रबंधन है। स्थानीय सामग्री से बने हवादार शेड, खेत की मेड़ों एवं आसपास उपलब्ध हरे चारे का उपयोग तथा परिवार के श्रम से इसका पालन आसानी से किया जा सकता है। अन्य पशुधन की तुलना में इसके लिए कम स्थान, कम पानी और कम प्रारंभिक निवेश की आवश्यकता होती है, जिससे छोटे किसान भी इसे अपना सकते हैं। प्रजनन क्षमता और उत्पादन बरबरी बकरी अपनी उच्च प्रजनन दर एवं बहु-शावक उत्पादन क्षमता के कारण व्यावसायिक बकरी पालन के लिए अत्यंत उपयुक्त नस्ल है। यह नस्ल सामान्यत 15 माह की अवधि में दो बार बच्चों को जन्म देती है। प्रत्येक प्रसव में औसतन 2-3 शावक प्राप्त होते हैं, जबकि उचित पोषण एवं वैज्ञानिक प्रबंधन की स्थिति में द्विन तथा ट्रिपलेट का प्रतिशत अधिक रहता है।बरबरी बकरी में पहली बार बच्चे देने की आयु 16-18 माह होती है तथा किडिंग इंटरवल लगभग 7-8 माह रहता है। इस प्रकार एक स्वस्थ मादा बकरी से औसतन प्रति वर्ष 3-4 बच्चों का उत्पादन संभव होता है, जो अन्य कई स्थानीय नस्लों की तुलना में अधिक है।इस उच्च प्रजनन क्षमता के कारण कम समय में झुंड का आकार बढ़ता है तथा नियमित अंतराल पर बच्चों की बिक्री से सतत नकद आय प्राप्त होती है, जो इस नस्ल को छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए अत्यधिक लाभकारी बनाती है। चारा एवं पोषण बरबरी बकरियों के लिए संतुलित पोषण की व्यवस्था खेत से ही की जा सकती है। नेपियर घास, बरसीम, लोबिया, मक्का, ज्वार जैसे हरे चारे के साथ-साथ अरहर, चना और गेहूँ के भूसे का उपयोग किया जा सकता है। बकरियाँ झाड़ियों एवं पेड़ों की पत्तियों को भी खाकर अपना पोषण पूरा कर लेती हैं। इस प्रकार फसल एवं पशुपालन एक-दूसरे के पूरक बन जाते हैं और चारे की लागत कम हो जाती है।

आय के स्रोत बरबरी बकरी पालन से आय के अनेक स्रोत हैं। 5-6 माह के बच्चों की बिक्री से त्वरित नकद आय प्राप्त होती है। त्योहारी सीजन में मांस के लिए इसकी मांग और बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त उन्नत नस्ल के बकरे एवं बकरियों की बिक्री से अधिक लाभ मिलता है। बकरी का गोबर उच्च गुणवत्ता की जैविक खाद है, जो खेत की उर्वरता बढ़ाकर रासायनिक उर्वरकों पर होने वाले खर्च को कम करता है। समेकित खेती में भूमिका समेकित खेती प्रणाली में बरबरी बकरी पालन विशेष रूप से लाभकारी है। यह फसल अवशेषों और खरपतवारों को उपयोगी उत्पाद में बदल देती है तथा खेत के लिए मूल्यवान जैविक खाद उपलब्ध कराती है। इससे मिट्टी की संरचना सुधरती है, जल धारण क्षमता बढ़ती है और फसल उत्पादन में

वृद्धि होती है। इस प्रकार फसल और पशुपालन एक-दूसरे के पूरक बनकर किसान की आय को स्थिर और टिकाऊ बनाते हैं। ग्रामीण आजीविका में योगदान बरबरी बकरी पालन छोटे एवं सीमांत किसानों, भूमिहीन मजदूरों, महिलाओं तथा ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार का सशक्त माध्यम है। कम स्थान और कम पूंजी में शुरू होने वाला यह उद्यम परिवार आधारित पशुपालन को बढ़ावा देता है। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से इसे अपनाकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जा सकता है। 20 + 1 बरबरी बकरी पालन यूनिट का कमाई मॉडल 20 मादा एवं 1 नर बरबरी बकरी की इकाई से इसकी तीव्र प्रजनन क्षमता के कारण लगभग 15 माह में दो बार किडिंग प्राप्त होती है तथा प्रति प्रसव औसतन 2-3 बच्चों के हिसाब से लगभग 75-80 बच्चे प्रतिवर्ष उपलब्ध हो जाते हैं, जिनमें से 10% मृत्यु दर घटाने के बाद लगभग 70-72 बच्चे बिक्री योग्य रहते हैं। इन बच्चों को 8-9 माह की आयु में 18-20 किग्रा जीवित भार पर औसतन ₹6,500-7,000 प्रति बच्चे की दर से बेचने पर लगभग ₹4.8-5.0 लाख की वार्षिक आय प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त गोबर खाद तथा अनुपयोगी पशुओं की बिक्री से ₹20-25 हजार की अतिरिक्त आमदनी होती है। दूसरी ओर हरा एवं सूखा चारा, संतुलित दाना, खनिज मिश्रण, टीकाकरण, औषधि, श्रम एवं अन्य प्रबंधन व्ययों पर लगभग ₹2.8-3.0 लाख प्रतिवर्ष का खर्च आता है। इस प्रकार वैज्ञानिक प्रबंधन की स्थिति में इस इकाई से प्रतिवर्ष लगभग ₹2.0-2.3 लाख का शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है तथा मादा बच्चों को रखकर झुंड का आकार बढ़ाने पर आगामी वर्षों में आय और अधिक हो जाती है, जिससे यह मॉडल छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए नियमित नकद प्रवाह का विश्वसनीय स्रोत बनता है। निष्कर्ष बदलते जलवायु परिदृश्य में बरबरी बकरी पालन छोटे किसानों के लिए सुरक्षित, टिकाऊ और लाभकारी पशुधन मॉडल के रूप में उभर रहा है। कम लागत, तेज प्रजनन, कम संसाधनों में पालन की क्षमता और बाजार में निरंतर मांग इसे नियमित नकद आय का विश्वसनीय स्रोत बनाती है।

समेकित खेती प्रणाली के साथ अपनाकर न केवल किसान की आर्थिक स्थिति मजबूत की जा सकती है, बल्कि मिट्टी की उर्वरता, पोषण सुरक्षा और ग्रामीण रोजगार को भी बढ़ावा दिया जा सकता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन के दौर में बरबरी बकरी पालन छोटे किसानों की स्थायी समृद्धि का एक प्रभावी मार्ग सिद्ध हो सकता है।